UP Board Notes Class 7 Sanskrit chapter 10 निम्बतरोः साक्ष्यम!

शब्दार्थाः- विमृश्य = सोचकर, गत्ते = गड्ढा, दद्वयोर्मध्ये = दोनों के बीच में, छम्मबुद्धिः – बेईमान, आहूतवान् = निकाल ले आया, अन्तिकम् = समीप, भवतु नाम = जाने दीजिए, अपरेदयु:दूसरे दिन, समुत्सुक = अत्यधिक आतुर, सम्मर्दः = भीड़, वाष्पकण्डः = रुंधे गले से, सद्य एवं = शीघ्र ही, शुष्केन्धनं = सूखी लकड़ियाँ, संहृत्य = इकट्ठा करके, निधाय = रखकर, स्वरसंयोगः = आवाज का संयोग, विस्मिताः = विस्मित या आश्चर्य चकित, सभाजितवान् = पुरस्कार किया, विश्रम्भात् = आराम अधिक आराम करने) से।

पुराः ..... संभाजितवान्।

हिन्दी अनुवाद – प्राचीन काल में एक गाँव में मनोहर और धर्मचन्द दो मित्र रहते थे। वे दोनों विदेश से धन कमाकर लाये। उन दोनों ने विचार किया कि घर में यह धन को (उन्होंने) एक वृक्ष की जड़ में गड्ढा करके (उसमें) रख दिया। दोनों के बीच आपस में एक मत हुआ कि जिसको (धन की) आवश्यकता होगी वह दूसरे के साथ आकर निकाल लेगा।

मनोहर सरल और सत्यनिष्ठ था, किन्तु धर्मचन्द अत्यन्त चतुर और बेईमान था। धर्मचन्द दूसरे दिन जाकर छिपाये गये (उस) सारे धन को ले आया। और उसके बाद धर्मचन्द ने मनोहर से कहा मित्र! चलो, कुछ धन लाना चाहिए।" दोनों वृक्ष के पास आ गये। वहाँ धन नहीं था। धर्मचन्द ने मनोहर पर आक्षेप लगाया कि उसने धन चुराया है। तत्पश्चात् झगड़ते हुए वे (दोनों) राजा के पास जाते हैं। दोनों का झगड़ा सुनकर राजा बोला- जाने दीजिए। (अब) कल नीम के पेड़ की गवाही को प्राप्त करके ही कोई फैसला होगा। सत्यनिष्ठ मनोहर ने विचार किया कि यही ठीक है। नीम का पेड़ असत्य नहीं बोलेगा। धर्मचन्द भी प्रसन्न था।

दूसरे दिन राजा दोनों के साथ नीम के वृक्ष के पास गया। उनके साथ उत्सुक लोगों की भीड़ भी थी। वे सब सत्य जानना चाहते थे।

राजा ने नीम के वृक्ष से पूछा- हे नीमदेव! कहो, धन किसके द्वारा चुराया गया है? 'मनोहर के द्वारा यह स्वर नीम की जड़ से प्रकट हुआ। यह सुनकर आँसुओं से रुंधे हुए कण्ठ बाले मनोहर ने कहा- 'महाराज! यह नीम का पेड़ असत्य नहीं कह सकता है। यहाँ कोई छद्म योजना है। मैं शीघ्र ही प्रमाणित करता हूँ।

मनोहर ने सूखा ईंधन इकट्ठा करके वृक्ष की जड़ में रखकर अग्नि प्रज्वलित कर दी। तत्काल ही वृक्ष की जड़ से- रक्षा करो- रक्षा करो- ऐसा स्वर संयोग सुना गया। राजा ने सैनिकों को आदेश दिया- "वहा जो भी हो, उसको बाहर लाओ। सैनिक वृक्ष की कोटर में स्थित व्यक्ति को बाहर लाये। उस व्यक्ति को देखकर सब आश्चर्यचकित थे। क्योंकि वह धर्मचन्द का बूढ़ा पिता था। राजी ने सभी (सबकुछ) जान लिया। उस (राजा) ने पिता और पुत्र को जेल में डाल दिया। और वह सारा धन पुरस्कार सहित मनोहर को समर्पित करके उसे पुरस्कृत किया।

https://www.evidyarthi.in/